प्रातः क्लास 30/12/68 ओम शान्ति पिता श्री शिवबाबा याद है ?

ओम शान्ति। अभी आती है शिवबाबा की जयन्ती। शिवबाबा की जयन्ती पर कैसे समझाना चाहिए। जैसे तुमको बाप ने समझाया है वैसे ही तुमको फिर औरों को भी समझाना है। ऐसे तो नहीं बाबा जैसे तुमको पढ़ाया है वैसे बाबा को ही सभी को पढ़ाना है। शिवबाबा ने तुमको पढ़ाया है। जानते हो इस शरीर द्वारा पढ़ाया है। बरोबर हम शिवबाबा की 33वीं जयन्ती मनाते हैं। यह शरीर तो 33वां नहीं है ना। इनकी जयन्ती नहीं मनाते हैं। तुमको मनुष्य कहते हैं दादा को भगवान क्यों कहते हो; परन्तु तुम तो शिवजयन्ती 33वीं मनाते हो। इनकी तो मना नहीं सकेंगे। हम किसकी जयन्ती मनाते हैं यह भी मनुष्यों को पूछना चाहिए ना; परन्तु मायावी बुद्धि होने कारण कुछ भी समझते ही नहीं। यह पूछते भी नहीं हैं कि 33वीं जयन्ती तुम किसकी मनाते हो। तो प्वाइंट्स समझानी पड़े। बाप खुद ही आकर बच्चों को समझाते हैं। तो तुमको भी समझाना पड़े। उनको तो पूछने का अकल ही नहीं है। बुद्धि में ही नहीं आता है। कौन है जिसकी 33वीं जयन्ती मनाते हैं। हम नाम भी शिव का लेते हैं। वह तो है ही निराकार। उनको शिव कहा जाता है। वह लोग तो कहते हैं शिव तो जन्म मरण से रहित है। उनकी फिर जयन्ती कैसी होगी। यह तो तुम जानते हो कैसे नम्बरवार मनाते आते हैं। मनाते ही रहेंगे। तो उन्हों को समझाना पड़े बाप आकर इस तन का आधार लेते हैं। मुख तो जरूर चाहिए। इसलिये गऊमुख की ही महिमा है। यह राज़ जरा पेचीला है। शिवबाबा की आक्युपेशन समझाने की बात है। हमारा बेहद का बाप आया हुआ है। उनसे ही हमको बेहद का वरसा मिलता है। बरोबर भारत को बेहद का वरसा था और किसको तो होता ही नहीं। भारत को ही सच्च खण्ड कहा जाता है और बाप को भी सत्य कहा जाता है। यह तो बातें समझानी पड़ती हैं फिर कोई को जल्दी समझ में नहीं आता है। कोई तो झट समझ जाते हैं। यह योग और एड्युकेशन(ज्ञान) दोनों तरकनी है। इसमें भी योग जास्ती तरकना है। नॉलेज .... बुद्धि में रहती ही है। बाकी याद ही घड़ी2 भूलते हैं। नालेज तो तुम्हारी बुद्धि में है। हम 84 जन्म लेते हैं। जिनको यह नालेज है वही समझते हैं। बुद्धि से भी समझते हैं जो पहले2 नम्बर में आते हैं वही 84 जन्म ....गे। पहले ऊंच ते ऊंच ल0ना0 को गिनेंगे। नर से ना0 बनने की कथा भी नामी–गिरामी है। पूर्णमासी पर बहुत जगह सत्य ना0 की कथा चलती है। अभी तुम जानते हो हम सच्च2 बाबा द्वारा नर से ना0 बनने की पढ़ाई पढ़ते हैं। यह है पावन पढ़ाई और है भी सभी पढ़ाइयों से बिल्कुल सहज। 84 जन्मों के चक्र को जानना है और यह पढ़ाई सभी के लिये एक ही है। बूढ़े, बच्चे, जवान जो भी हो सभी के लिये है एक ही (प)ढ़ाई। छोटे बच्चों का भी हक है। अगर माँ बाप उनको थोड़ा–2 सिखलाते रहे तो टाइम तो बहुत पड़ा है। बच्चों (को) यह भी सिखलाया जाता है शिवबाबा को याद करो। आत्माओं और शरीर दोनों का बाप अलग2 है। आत्मा बच्चा भी निराकारी है तो बाप भी निराकारी है। यह भी तुम बच्चों की बुद्धि में है वह निराकार शिवबाबा हमारा बाप है। कितना छोटा है। यह अच्छी रीत याद रखना है। भूलना न चाहिए। हम आत्मा भी बिन्दी मिसल छोटी हैं। ऐसे नहीं ऊपर में जावेंगे तो बड़ी दिखाई पड़ेगी। नीचे छोटी हो जावेगी। नहीं। भृकुटि के बीच में चमकता है (अज)ब सितारा। तो वह बिन्दी मिसल है। ऊपर में जावेंगे तो तुमको जैसे देखने में भी आवेंगे। बिन्दी है ना। बिन्दी क्या देखने में आवेंगे। इन बातों पर अच्छी रीत बच्चों को विचार करना है। हम आत्माएं ....र आई हैं शरीर धारण कर पार्ट बजाने। छोटे शरीर वा बड़े शरीर में एक ही आत्मा है। आत्मा बढ़ती–घटती नहीं है। आरगन्स पहले छोटे फिर बड़े होते हैं। अभी जैसे तुमने समझा है वैसे फिर औरों को भी समझाना है। है तो जरूर है नम्बरवार जो जितना पढ़ा है उतना पढ़ाते भी हैं। सभी को टीचर भी जरूर बनना है। सिखलाने ....। बाप में तो नालेज है वह इतनी छोटी सी परम आत्मा है। सदैव परमधाम में रहते हैं। यहां एक ही बार संगम पर आते हैं। बाप को पुकारते भी तब हैं जब बहुत दुःखी होते हैं तब कहते हैं आकर हमको सुखी (बना)ओ। बच्चे अभी समझते हैं हम पुकारते रहते हैं बाबा आकर हमको पतित दुनियां से नई पावन दुनियां

में लो जाओ अथवा वहां जाने का रास्ता बताओ। वह भी जब खुद आवे तब तो रास्ता बतावे। वह आवेंगे तब जब दुनियां को बदलना होगा। यह बड़ी सहज बात है। नोट करना है। बाबा ने आज यह समझाया है। हम भी ऐसे समझाते थे। ऐसी प्रैक्टिस करते2 मुरली खुल जावेगी औरों का कल्याण करेंगे तब तो नई दुनियां में ऊंच पद पावेंगे। वह पढ़ाई तो है यहां के लिये। यह है भविष्य नई दुनियां के लिये। वहां तो सदैव सुख ही सुख है। वहां 5 विकार तंग करने वाले होते ही नहीं। वहां रावण राज्य अर्थात् पराई राज्य में है। तुम्हीं पहले अपने राज्य में थे। तुम कहेंगे नई दुनियां में हम भारतवासी ही थे और कोई नहीं थे। भारत को ही नई दुनियां फिर भारत को ही पुरानी दुनियां कहा जाता है। गायन भी है नई दुनियां में भारत। ऐसे नहीं कहेंगे नई दुनियां में ईस्लामी, बौद्धी। नहीं। अभी तुम्हारी बुद्धि में है बाप आकर हम बच्चों को जगाते हैं। ड्रामा में पार्ट ही उनका ऐसा है। भारत को ही आकर स्वर्ग बनाते हैं। भारत ही पहला देश है। भारत पहले देश को ही स्वर्ग, हेविन कहते हैं। भारत की आयु भी लिमिटेड है। लाखों वर्ष कहना यह तो अनलिमिटेड हो जाता है। लाखों वर्ष की बात कोई स्मृति में आ नहीं सकती। यह तो सब समझते हैं नया भारत था। अभी पुराना भारत कहेंगे। भारत ही नई दुनियां होगी। तुम जानते हो हम अभी नई दुनियां के मालिक बन रहे हैं। बाप ने राय बताई है मुझे याद करो तो तुम्हारी नई प्योर आत्मा बन जावेगी। तत्व भी सतोप्रधान होती है ना तो उनसे शरीर भी ऐसा सतो0 होता है। तुमको राज्य मिलता ही है सुख के लिये। यह भी ड्रामा अनादि बना हुआ है। नई दुनियां में सुख और शान्ति है। वहां कोई भी तूफान आदि नहीं होते। बेहद की शान्ति में भी शांति हो जाती है। यहां है अशान्ति। तो सभी अशान्त हैं। सतयुग में सभी शान्त होते हैं। वन्डरफुल बातें हैं ना। यह अनादि बना बनाया खेल है। यह है बेहद की बात। वह हद के बैरीस्टरी इजीनियरिंग आदि पढ़ते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में बेहद की नालेज है। एक ही बार बाप आकर ड्रामा का राज़ समझाते हैं। आगे तुम यह नाम भी नहीं सुना था कि बेहद का ड्रामा कैसे चलता है। अभी समझते हो सतयुग–त्रेता था जरूर वह पास्ट हो गया है। द्वापर भी पास्ट हो गया। अभी कलियुग का अन्त है। यह तो सभी की बुद्धि में है ना। सतयुग पास्ट हो गया। उसमें भी इनका राज्य था। त्रेता में राम राज्य था। पीछे फिर और2 धर्म आये हैं। पहले2 स्वर्ग में ल0ना0 का राज्य था। चित्र भी है त्रेता में राम राज्य था। अभी त्रेता ही नहीं है तो रामराज्य फिर कहां से आवेगा। अभी तो अनेक राज्य हैं। त्रेता के बाद अनेक राज्य होते हैं। यह तो सभी जानते हो कौन कौन कब आये हैं। इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चयन सभी धर्मों का पूरा मालूम है। 2500 वर्ष है। उनका हिसाब है ना। मिलाकर 2500 वर्ष हैं उनमें 1250 वर्ष उनको 1250 वर्ष इनको (रामचन्द्र को) 2000 वर्ष उनको . ..... हिसाब है ना। मिलाकर 2500 वर्ष आधा कल्प की बात हुई। ऐसे तो नहीं सृष्टि की आयु 2500 वर्ष है। नहीं। अच्छा, फिर और कौन था। विचार किया जाता है। इन्हों के आगे बरोबर देवी देवताएं थे। वह भी मनुष्य थे ना; परन्तु दैवीगुण वाले थे। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी 2500 वर्ष में। बाकी आधा में वह सभी थे। इससे जास्ती का तो कोई हिसाब निकाल न सके। फल पौना, आधा, चौथा। चार हिस्से हैं। कायदे ....रे टूकड़ा2 करेंगे ना। आधा में तो यह है। कहते भी हैं सतयुग में सूर्यवंशी राज्य। त्रेता में चन्द्रवंशी राज्य। तुम सिद्ध कर बताते हो। तो जरूर सभी से बड़ी आयु इनकी होगी ना जो पहले2 सतयुग में आते हैं। सेकण्ड नम्बर में त्रेता वाले होंगे। टाइम ही 5000 वर्ष का है। वह लोग 84 लाख योनियां कह देते हैं तो कल्प की आयु भी लाखों वर्ष कह दिया है। तीन मुख्य धर्मों का तो टाइम निकला। बाकी सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी दो का लाखों वर्ष कैसे हो सकता है। कोई माने भी नहीं। इतनी बड़ी दुनियां हो भी न सके। जानवर आदि सभी एड कर दिया है। तो 84 लाख योनियां कह देते हैं। तो बाप बैठ समझाते हैं वह सभी है अज्ञान और यह है ज्ञान। अज्ञान कहां से आया यह किसको भी पता नहीं। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। वही ज्ञान देते हैं मुख से। कहते हैं गऊ मुख। इस गऊमाता से तुम सभी को एडाप्ट करते हैं। यह थोड़ी2 बातें समझाने (में) तो बड़ी सहज हैं। एक रोज़ समझाकर और फिर छोड़ देंगे तो बुद्धि फिर और2 बातों में लग जावेगी। स्कूल में

एक ही दिन नहीं पढ़ा जाता रेगुलर पढ़ा जाता है ना। नालेज एक दिन में समझी जा सकते हैं। बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। तो जरूर बेहद की पढ़ाई होगी। बेहद का राज्य देते हैं। भारत में बेहद का राज्य था ना। यह ल0ना0 बेहद का राज्य करते थे। किसको यह बातें स्वप्न में नहीं हैं। जो पूछे कि इन्होंने राज्य कैसे लिया? इन्हों में प्युरिटी जास्ती थी। योगी है ना। इसलिये आयु भी बड़ी होती है। हम ही योगी थे फिर हम ही 84 जन्म ले भोगी बने हैं। मनुष्य नहीं जानते यह भी जरूर पुनर्जन्म में आये होंगे। इन्हों को भगवान भगवती नहीं कहा जाता। इनसे पहले तो कोई नहीं जिसने 84 जन्म लिया हो। इनसे आगे 84 जन्मों वाला कोई होता ही नहीं। पहले2 तो सतयुग में राज्य करते हैं। वही 84 जन्म लेते हैं। फिर नम्बरवार नीचे आते हैं। हम आत्मा सो देवता बनेंगे फिर नम्बरवार पीछे आते हैं हम आत्मा सो देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे। आत्मा की ही डिग्री कम होगी। गाया भी जाता है पूज्य सो पुजारी। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हो। ऐसे पुनर्जन्म लेते2 नीचे चले जावेंगे। यह कितना सहज है; परन्तु माया ऐसी है जो यह बातें भुला देती है। यह सभी प्वाइंट इकट्ठी कर किताब बनानी चाहिए फिर इसको अध्ययन करना चाहिए। यह भी जानते हो विनाश होगा तो फिर यह किताब आदि कुछ भी नहीं रहेंगी। यह टेम्परेरी है। बाप ने कोई गीता नहीं सुनाई थी। बाप जैसे अब समझा रहे हैं ऐसे समझाया था। यह वेद शास्त्र आदि भी बाद में बनते हैं। यह सभी होललाट(होलसेल) जो है विनाश होगा तो यह सभी जल जावेंगे। सतयुग त्रेता में कोई पुस्तक होता ही नहीं। फिर भक्ति मार्ग में बनते हैं। कितनी चीजें बनती हैं; परन्तु बेसमझ से। कुछ भी बता नहीं सकते। बाप समझाते हैं यह हर वर्ष बनाते हैं और जलाते हैं। जरूर यह बड़ा दुश्मन है; परन्तु कैसा दुश्मन है यह कोई भी नहीं जानते। वह समझते हैं सीता चुराकर ले गया। इसलिये शायद दुश्मन है। राम की सीता को चुराकर ले जावे तो यह तो बड़ा डाकू हुआ ना। कब चोरी की। त्रेता के अन्त में कहें वा त्रेता में कहें। इन बातों पर भी विचार किया जाता है कि कब चोरी होनी चाहिए। कौन सी राम की सीता चोरी हुई। राम सीता की भी राजधानी चली है ना। क्या एक ही राम सीता चले आते हैं क्या? यह तो शास्त्रों में जैसे कि एक कहानी बनाई है। इतने लगते नहीं हैं। विचार किया जाता है कौन सी सीता! 1/2 नम्बर होते हैं ना राम–सीता। कौन सी सीता को चुराया? जरूर पिछाड़ी का होगा जो फिर रावण हमेशा लिये मर जावे फिर कब सीता को ले ही न जाये। यह बातें भी शोभे तब जब कोई बैठ रामायण सुनावे तो सयाणा समझू बैठ उनसे पूछे बिल्कुल सत्यता में पूछे। यह जो कहते हैं राम की सीता चुराई गई। अब राम के राज्य में सारा समय एक ही राम का राज्य तो नहीं होगा ना। जरूर डिनायस्टी होगी। तो कौन सी नम्बर की सीता चुराई गई? जरूर पिछाड़ी की समझेंगे तब फिर रावण राज्य पूरा होता है और फिर सतयुग शुरू होता है; परन्तु त्रेता के बाद में द्वापर आता है। तो यह बातें भी ठहरती नहीं। तो कहेंगे यह सभी शास्त्र झूठे हैं। शास्त्रों को कब कोई झूठा कहें तो कितना बिगड़ते हैं। तिथी तारीख कुछ भी नहीं। उन शास्त्रों का मान कितना है। है तो कुछ भी नहीं। बाप समझाते हैं वेद शास्त्र सभी गपोड़े हैं। उनसे कोई मेरे साथ मिल नहीं सकता। बाप समझाते हैं भक्तिमार्ग में कितना धक्का खाते2 दुःखी हो गये हैं। जब अति दुःखी हो जाते हैं तब रड़ियां मारते हो। बाबा इस दुःख से छुड़ाओ। रावण तो कोई चीज़ नहीं है ना। अगर है तो अपने राजा को फिर हर वर्ष मारते क्यों हो। रावण की जरूर स्त्री भी होगी। मंदोद्री दिखाते हैं। मंदोद्री का बुत बनाकर जलावें ऐसा कब देखा नहीं है। तो बाप बैठ समझाते हैं यह है ही झूठी माया.... शास्त्र भी सभी झूठे हैं। खण्ड भी झूठा। खण्ड में रहने वाले सभी मनुष्य भी झूठे बन जाते हैं। अभी तुम झूठे मनुष्य से सच्चा देवता बनने आये हो। फर्क तो बहुत है ना। वहां तुम सदैव सच्च बोलेंगे। वह है ही सच्च खण्ड। यह है झूठ खण्ड। तो सदैव झूठ बोलते हैं। नम्बरवन झूठ ईश्वर सर्वव्यापी कहते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारी बात आई है। सर्व शास्त्रमई गीता में भी झूठ लिख दिया है कि मैं सर्वव्यापी हूँ। बाप कहते हैं मैं ने तो कब ऐसा कहा नहीं कि मैं सर्वव्यापी हूँ। सर्वव्यापी तो मेरे बच्चे हैं। सामने सम्मुख बैठे हैं। बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं तुम्हारा घर वह है। बाप की

कितनी महिमा है। ज्ञान का सागर है वही सर्व की सद्गति करते हैं। वही तुमको ज्ञान देते हैं और कोई में ज्ञान है नहीं। नई दुनियां को स्वर्ग कहा जाता है। बाप आते ही हैं नई दुनियां की स्थापना करने। अभी शिव जयन्ती आती है बच्चों को विचार करना है ऐसी कौन सी बात बतावें जो उन्हों को समझ में आवे। तुम प्रदर्शनी, म्युजियम आदि में बहुत समझाती हो। लिखते हो बाबा 8/10 , 15/20 आते हैं, कोर्स लेते हैं। आगे चलकर और भी एड होते जावेंगे। कट भी हो जावेंगे। तुम्हारे पास जो ढेर आवेंगे ऐसे नहीं पढ़ते रहेंगे सभी। माया बुद्धि का योग तोड़ एकदम अनपढ़ बना देगी। भागन्ति हो जावेंगे। तुम खुद जानते हो ब्राह्मणियां जानती हैं। आते तो बहुत ही हैं कोर्स लेने फिर भागन्ति हो जाते हैं। कौओं में कोई ठहरते हैं। कोई विरला जानेंगे। मैं जो हूँ, जैसा हूँ विरला ही कोई जाने। 12/15 वर्ष हुआ पढ़ाते रहते हैं। कोई तो पीछे आने से भी इतना होशियार हो जाते हैं तो पढ़ाने वाले से भी तीखे जाते हैं। झट पढ़ाने लग पड़ते हैं। एक हप्ता में तुम बहुत नालेज उठा सकते हो। बाप को जानना है और 84 के चक्र को जानना है और दैवीगुण भी धारण करनी है। बड़ी बात तो है नहीं। फिर भी देखा जाता है बहुत मेहनत है। तमोप्रधान से सतोप्रधान इस एक ही जन्म में बनना है। इसमें मेहनत लगती है। इतना सिर्फ़ बाप को ही याद करो और कोई भी याद न आये यह हो नहीं सकता। माया बहुत विघ्न डालती है। इतने वर्ष हुये हैं अभी तक सतोप्रधान नहीं बने हैं। सात दिन की भिती दी जाती है। नटशेल में तो समझ जाये। बाकी याद की यात्रा में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। घड़ी2 भूल जाते हैं। याद में सारा समय रह तुम भोजन खाओ मुश्किल है। बाबा पूछते नहीं हैं। तुम अपने ग्रेड को समझ सकते हो। बाबा खुद अपना अनुभव सुनाते हैं। अनेक प्रकार की युक्तियां रचता हूँ बाप को याद करने की; परन्तु फिर भी याद ठहरती नहीं है। दो/चार गिटी याद में खाये फिर भी भूल जाता हूँ। फिर याद में बैठता हूँ। एक/दो मिनट याद ठहरती फिर खिसक जाती है। अनुभव है ना। समझते हैं यह तो सभी स्टुडेन्ट को होगा। माया और तरफ ले जाती है। जैसे और बातों में माया गिराये देती है। इसमें भी माया गिराती है। बाप समझाते हैं अभी हर एक अपने से पूछे। नालेज भी भूल जाते हैं। शौक ही टूट जाता है। 10/20 वर्ष पुरू0 करते2 फिर टूट पड़ते हैं। माया की बहुत कड़ी गोली लग जाती है। एकदम मर पड़ते हैं। जितना बाप सर्वशक्तिवान है उतना ही 5 विकार रूपी रावण भी जबरदस्त है। हेर पड़ी हुई है ना। इस पर सिन्धी में पहाका देते हैं ना। हेर पड़ी हुई है सर्वव्यापी की तो कितना भी समझाओ समझते ही नहीं। भल टांग भी टूट जाये। तो भी हेर न उतरे। इसमें बहुत मेहनत करनी पड़ती है। पद भी बहुत भारी मिलता है। बाबा भी लिखते हैं ना तुम 21 जन्मों के लिये पदमापदम भाग्यशाली बनते हो। कितना सुख मिलता है। भगवान को आना पड़ता है फिर सतोप्रधान बनाने। फार एवर सतोप्रधान जो हैं वही पढ़ा सकते हैं। सिवाय बाप के और तो कोई फार एवर सतोप्रधान हो न सके। चक्र में तो सभी में आना ही है। नहीं तो 84 जन्म कौन लेंगे। तमोप्रधान से फिर सतोप्रधान जरूर बनना है। बाप ने समझाया है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारी बैटरी भर जावेगी। घड़ी2 माया डिसकनेक्ट कर देती है। पता भी नहीं पड़ता है। सभी आत्माओं की बैटरी इस समय भरती है। यह तुम कल्प कल्प मेहनत करते हो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार सभी की बैटरी भरती है। नम्बरवार मोचरे अनुसार भी। मानी मिलती है तो मोचरा भी। मैनर्स इसमें बहुत अच्छी चाहिए। वह होगी याद की यात्रा से। पढ़ाई से पैसे मिलेंगे। दैवीगुण भी चाहिए तब तो पैसा भी शोभेगा। तुम मेहनत बहुत करते हो; परन्तु माया खा जाती है। लिखते हैं बड़ा ही अच्छा चलता था अचानक ही गुम हो गया। आता ही नहीं है। घायल हो जाते हैं। फिर तुम बच्चों को तो खातरी है स्थापना तो हो ही जानी है। माया दुश्मन भी कम नहीं है। फिर भी जानते हो कल्प2 हम जीत जरूर पाते हैं। हार और जीत का तो खेल है। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।